Journal of Namibian Studies, 33 (2023) : 1132-1141 ISSN: 2197-5523

Special Issue on Multidisciplinary Research

Study of The Wall Paintings of Braj Depicting Mythological

Sunil Kumar Sahu[1] , Dr. Ramkrishna Ghosh[2]

[1]Research Scholar Department Of Visual And Performing Arts Mangalayatan University , Aligarh Uttar Pradesh.
[2]Associate Professor Department Of Visual And Performing Arts Mangalayatan University , Aligarh Uttar Pradesh.

Abstract :
The wall paintings of Braj, a culturally rich region associated with the life of Lord Krishna, provide a visual narrative of mythological themes deeply rooted in Indian tradition. This paper explores the artistic, cultural, and historical significance of these murals, focusing on their thematic representation, stylistic features, and social relevance. By delving into the mythological motifs and their reflection of Braj's devotional culture, the study seeks to highlight the role of art in preserving and promoting intangible heritage.

Keywords: Braj, wall paintings, mythological culture, Krishna, cultural heritage.

पौराणिक संस्कृति को दर्शाते बृज के भित्ति चित्रों का अध्ययन :

सुनील कुमार साहू
शोधार्थी,दृश्य और प्रदर्शन कला विभाग
मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ

डॉ. रामकृष्ण घोष
शोध निर्देशक, दृश्य और प्रदर्शन कला विभाग
मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ

शोध सारांश –इस अध्ययन में मथुरा तीर्थ स्थल पर आने वाले भक्तों की मंदिरों में बने भित्ति चित्र एवं मूर्तियों के प्रति अभिव्यक्ति को प्रभावित करने वाले अनेक कारकों का अध्ययन किया गया।

जिस तरह भारत के धार्मिक मानचित्र पर मथुरा एवं बृज क्षेत्र के सशक्त हस्ताक्षर हैं, ठीक उसी प्रकार भारत में पनपी विभिन्न प्रकार की कला–वृत्तियो की दुनिया में भी मथुरा को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इस स्थान का सबसे बड़ा साक्षी हैं– मथुरा शहर के बीचो बीच स्थापित किया गया म्यूजियम। इस म्यूजियम के अंतर्गत मथुरा एवं आसपास के इलाको में पाये गए पाषाण चित्रों, सिक्कों एवं अन्य कलाकृतियों को संरक्षित किया गया है।

सार–यदि इतिहास एवं एंथ्रोपोलोजी के मानचित्र में मथुरा का स्थान इसी संग्रहालय की वजह से ढूंढा जाये तो मथुरा को हमेशा उच्च सोपान पर ही आसीन किया जाएगा। यदि कोई शोधार्थी "मथुरा कला" का विशद अध्ययन एक ही छत के नीचे रह कर करना चाहता है तो वह छत मथुरा के म्यूजियम की हो सकती है जहां ऐसी कलाकृतियां भी संग्रहीत हैं जिनकी आयु एक हजार वर्ष से भी ज्यादा पुरानी है। इतने विशद इतिहास को अपने भीतर समेटे इन कलाकृतियों और मूर्तियो को मूलरूप से तीन कालखंडो में बांटा जा सकता है ।

1– मौर्य काल से पूर्व की कलाकृतियां

2– मौर्यकालीन कलाकृतियां

3– इंडो–ग्रीक कलाकृतियां एवं सिक्के

मौर्य काल से पूर्व की कलाकृतियों के अंतर्गत अंग्रेजो द्वारा किए गए अन्वेषण के फलस्वरूप मिले हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के समकक्ष की कलाकृतियां पाई गयी। इसी तरह मौर्यकालीन कलाकृतियां भी मिली है जिनमें बौद्धधर्म और जैन धर्म के प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं। मथुरा की कला संस्कृति को विशिष्ट बनाते हैं इंडो–ग्रीक काल के कला स्तम्भ जो सिक्कों, मूर्तियों और मूर्तियों के साँचों की शक्ल में उपलब्ध हैं। इन तीनों को जब एक समवेत रूप में देखा जाता है तो उस अध्याय को नाम दिया जाता है "कलाकृतियों का मथुरा स्कूल" बौद्ध धर्म में जातक कथाओ को लेकर बने चित्रों से लेकर वर्तमान में बने बृज के भित्ति चित्रों तक की कलाकृतियां इसी स्कूल के विभिन्न खंडो में समाहित हैं।

वह परिकल्पना जिसके अंतर्गत कला को इतिहास से जोड़ कर देखा जाता है मथुरा स्कूल के ऊपर बड़ी आसानी से लागू की जा सकती है। कई कलाविद और इतिहासकारों की राय यदि सार रूप में व्यक्त की जाये तो वो इस प्रकार होगी "मथुरा की कला भारतीय कला के एक विशेष स्कूल को संदर्भित करती है, वर्तमान में यह कला पूरी तरह से मूर्तिकला के रूप में अस्तित्व में है। इसका प्रमुख कारण ये है कि पत्थर एक स्थायी माध्यम

है जिसकी आयु कला अभिवयक्ति के अन्य माध्यमों से ज्यादा होती है।

इस आधार पर ये भी कहा जा सकता है की मथुरा स्कूल के कलाकारों ने अन्य माध्यमों पर भी अपनी अभिव्यक्तियां उकेरी होगी और उनका भी एक स्वतंत्र इतिहास रहा होगा, परंतु वह इतिहास संरक्षित नहीं किया जा सका होगा। उदाहरण के तौर पर हम भित्ति चित्रों को ले सकते हैं, भित्ति चित्रों की आयु पत्थर पर उकेरी गयी कलाकृतियों की तुलना में कम होती है। मगर ये भी माना जा सकता है की भित्ति चित्र भी कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम रहे होंगे। कला कई बार माध्यमों की जगह शैली के रूप में भी संरक्षित होती है। क्या इस सार्वभौमिक सिद्धान्त को मथुरा की कला के संदर्भ में अनुपोषित किया जा सकता है ?

इस प्रश्न का उत्तर शैलीगत विशेषताओ के अंतर्गत मथुरा में पायी गयी विभिन्न कलाकृतियों में ढूंढा जा सकता है। इस शैली को कलाकृतियों को जोड़ने वाले सेतु को संस्कृति और धर्म के रूप में भी देखा जा सकता है। मथुरा का कला स्कूल मूलरूप से तीन सांस्कृतिक धाराओ की संगमस्थली के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है। ये धाराएं हैं जैन धर्म से जुड़ी संस्कृति, बौद्ध धर्म से जुड़ी संस्कृति और हिन्दू धर्म के भक्तिमार्ग से जुड़ी संस्कृति आमतौर पर इस प्रकार के अन्वेषण करते समय यदि चित्रों से जुड़ी अथवा चित्रों का मूल प्रेरणास्त्रोत रही संस्कृति को भी एक पैमाने के तौर पर शामिल कर सकते हैं। वर्तमान आलेख में भी इसी प्रकार का एक प्रयास किया गया है जहां पर मथुरा की कला–संस्कृति को यहाँ की कला परंपरा के समानान्तर रख कर कुछ निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है।

जब मथुरा की कला या फिर मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट्स की कलाकृतियों को धार्मिक एवं सांस्कृतिक कालखंडो में बांटा जाता है तो तीन प्रकार के कला खंड प्राप्त होते हैं।

1– मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट्स का बौद्ध कलाखंड

2– मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट्स जैन कलाखंड

3– मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट्स का हिन्दू कलाखंड

जैन कलाखंड से जुड़ी मूर्तियों और चित्रों के विषय मूल रूप से जैन तीर्थंकरों के रूप अंकन, धार्मिक एवं स्थान जनित प्रतीकों को पत्थरों पर तराशने तक ही सीमित थे। इस प्रकार के चित्र मथुरा में बड़ी अल्पमात्रा में पाये जाते हैं, इन्हे कभी भी बृजभूमि के अंदर जैन धर्म के प्रसार से जोड़ कर नहीं देखा गया। अपितु ये माना गया की मथुरा और आसपास के इलाको में मूर्ति–अंकन एवं चित्रांकन की एक समृद्ध परंपरा रही होगी जिसके अंतर्गत इन चित्रों को बनाकर इनका निर्यात भारत के विभिन्न हिस्सो में किया गया होगा। यदि हम कलाकृतियों के दृष्टिकोण से मथुरा एवं आसपास के इलाको में पायी गयी मूर्तियो को देखे तो हम पाते हैं की मूर्तियों पर इंडो–ग्रीक कला का बड़ा गहरा प्रभाव है। ऐसा इस आधार पर भी कहा जा सकता है क्यूंकि इन चित्रों और मूर्तियों में तीर्थंकरों के शरीर और चेहरे बड़े ही सुगठित हैं। ये चित्र और मूर्तियां सौन्दर्यबोधग्राहिता के सारे मानदंडो पर खरी उतरती हैं। जैसा की बाकी ग्रीक चित्रो के साथ हुआ है इन चित्रों में नायक या नायिका के चेहरे पर ही मुख्य संकेन्द्रण है। मगर इस प्रकार की परिकल्पनाए अपूर्ण मानी जाती हैं क्यूंकी इंडो–ग्रीक कला और जैन कलाखंड के सम्यक एवं समानांतर अस्तित्व एवं विकास के स्पष्ट प्रमाण हमें आसानी से नहीं मिलते।

हालांकि बौद्ध कलाखंड के अंतर्गत विकसित हुयी कलाकृतियों को उपरोक्त परिकल्पना के अंतर्गत देखा जा सकता है। ये माना जा सकता है की मथुरा की कला परंपरा के अंतर्गत इंडो–ग्रीक कलाएं एवं बौद्ध विषयवस्तुओं पर आधारित चित्र एक साथ पल्लवित हुये होंगे। कई इतिहासकार एवं वास्तुकार मानते हैं की मथुरा स्कूल की कलाकृतियों में आज भी वो छाप नजर आ जाती है जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में शुरू हुई थी। माना जाता है की ये छाप उस कला स्कूल की वजह से पड़ी थी उस समय मध्य उत्तर भारत में मथुरा शहर में स्थापित हुआ था। इस आधार पर एक काल भी निर्धारित किया गया जिसके दौरान बौद्ध धर्म, जैन धर्म और प्राचीन हिन्दू धर्म से जुड़ी कलाकृतिया यहाँ विकसित हुयी और एक कला एवं अभिवयक्ति की एक मिश्रित परंपरा के रूप में कलाकारो की आने वाली पीढ़ियो के बीच संवाहित हो गई।

कला जगत की शब्दावली में ये भी कहा जा सकता है की मथुरा की कला भारतीय कला के एक विशेष स्कूल को संदर्भित करती है जो लगभग पूरी तरह से मूर्तिकला के रूप में जीवित है। इसका उद्गम समय दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में माना जा सकता है। इस शैली के प्रमुख योगदान चित्रों में मौर्य शैली के साथ एक ष्तीव्र विरामष के प्रतिनिधि के रूप में माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त इस शैली में पहली बार पवित्र आकृतियों

Journal of Namibian Studies, 33 (2023) : 1132-1141 ISSN: 2197-5523

Special Issue on Multidisciplinary Research

को अलग से पहचाना गया और उनके शरीर के कई हिस्सों, विशेष रूप से सिर और बाहों को एक विशिष्ट भारतीय परंपरा के अंतर्गत रचा गया। माना जाता है की मथुरा कला स्कूल की पहली पहचान चौथी शताब्दी के आसपास स्थापित हो गयी थी जब वैदिक काल में प्राप्त हिंदू आकृतियों को एक विशिष्ट रूप से चित्रित किया जाने लगा था।

भारत में धर्म के माध्यम से हुये सांस्कृतिक सरलीकरण की यात्रा और कला का योगदान :

मथुरा एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष में पिछले 1500 वर्षो में एक धार्मिक सरलीकरण हुआ, इस सरलीकरण के अंतर्गत धर्म से जुड़ी पुरानी परम्पराओं को आसान किया गया और कई बार कुछ नए धर्म और संप्रदाय भी प्रकाश में आए। मूल रूप से कहा जा सकता है की इस धार्मिक सरलीकरण के माध्यम से कुछ ऐसी सांस्कृतिक परंपराएं भी प्रकाश में आई जिन्होने जीवन को आसान बनाया। उदाहरण के तौर पर हम बौद्ध धर्म का विकास और उसके बाद भक्ति धारा के विकास का युग देख सकते हैं। माना जाता है की बौद्ध धर्म प्रकाश में आया क्यूंकी जनता कठिन कर्मकांडों से ऊब चुकी थी। कर्मकांड करने के लिए उन्हे पंडितो के पास जाना पड़ता था और पंडित अपने कायदे और कानूनों के अनुसार उनके जीवन को निर्धारित करने की कोशिश करते थे। बीतते समय के साथ ये कर्मकांड इतने जटिल होने लगे की उनका धार्मिक स्वरूप छिन्न भिन्न हो गया और एक नया व्यावसायिक स्वरूप प्रकाश में आया। ये व्यावसायिक स्वरूप समाज के कुलीन वर्ग के लिए तो उचित था परंतु आर्थिक रूप से कमजोर निम्न वर्ग इस की चक्की में पिसने लगा।

महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म की संस्थापना के साथ ऐसे धर्म का विकास किया जिसमें आर्थिक संसाधनो की जगह तपस्या एवं विचारो की शुद्धि को धर्म के साथ जुडने के संसाधन के रूप में स्थापित किया गया। इस नए धर्म में विचार संस्कारो के प्रेरक के रूप में उभर कर सामने आए। माना जाता है की चित्रकला एवं साहित्य के माध्यम से इन विचारों को समाज में प्रतिपादित किया गया और इस वजह से भारत में पनपी कई स्थानीय

कलाओं में बौद्ध धर्म के अग्रणी कथानकों के प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आए ।

इसके अतिरिक्त अशोक की कलिंगा विजय के बाद बौद्ध धर्म का एक संस्करण भी प्रकाश में आया जिसके अंतर्गत धर्म के उपदेशो को जीवन–वृत्ती के साथ नए रूप से समन्वयित किया गया तथा अहिंसा का प्रचार भी किया गया। इस सरलीकरण के अंतर्गत जीवन के संदेश हर उम्र के लोगो तक पहुँच सकें इसके लिए महात्मा बुद्ध के उपदेशों एवं उनसे जुड़ी कहानियों को तरह तरह से लिपिबद्ध किया गया। मगर ये उपदेश अब भी भाषा के दृष्टिकोण से काफी कठिन थे आम आदमी तक इनकी पहुँच सुनिश्चित करने के लिए इन्हे कई प्रकार के चित्रों एवं कलात्मक रूपों में ढाला गया।

इस प्रकार एक नयी चित्र परंपरा का निर्माण हुआ, कुछ ऐसे चित्र अस्तितिव में आए जो एक सरल धर्म के संदेश एकदम सरल भाषा में अपने भीतर समेटे हुये थे। इतिहास एवं साहित्य की दुनिया में इन्हे जातक कथाओं का नाम दिया गया, जातक कथाओं के बारे में विस्तार से लिखने वाले इतिहासकार एवं इन पर आधारित टीका विकसित करने वाले साहित्यकार इन कथाओं को भगवान बुद्ध के विभिन्न जन्मों से जोड़ते हैं तथा जीवन मरण के चक्र को प्रतिपादित करते हुये उसमें मानव मात्र की धर्मपरक भूमिकाओं को प्रकृति के मध्य रह कर निर्धारित करते हैं। जातक कथायें एवं इन पर आधारित चित्र एक प्रकार के सांस्कृतिक सरलीकरण की तरफ इशारा करते हैं जहां पर धर्म के मार्ग को एक ऐसे माध्यम से प्रस्तुत किया गया जो सभी के लिए सुग्राहय था।

जातक कथा की कहानियों में प्रकृति सिर्फ एक पार्श्व नहीं एक पात्र भी था। वन्य जीवन एवं प्रकृति तथा मानव के परस्पर अभियोजन को इन कथाओं में मूल बिन्दु की तरह परिभाषित किया गया है। यही कारण है की इन कथाओं पर आधारित जो चित्र एवं कलाकृतियां बनाए गए उनमें प्रकृति चित्रण की एक समृद्ध परंपरा भी विकसित हुई। मथुरा स्कूल के चित्रो एवं कलाकृतियों में इस प्रकार के प्रकृति चित्रण के कई उदाहरण नजर आते हैं। इन्हे समझने के लिए हम इनकी तुलना इनके समकालीन चित्रों से करने पर पाते हैं की उन चित्रों एवं मूर्तियों में राजदरबार, प्रसादों एवं नगरीय संस्कृति को पार्श्व के रूप में चुना गया। मगर मथुरा स्कूल के अधिकतर चित्रों में पार्श्वभूमि के तौर पर प्रकृति को वरीयता दी गयी।

मथुरा के धार्मिक भित्ति चित्रों को यदि स्थान जनित कला शैली के दृष्टिकोण से देखा जाये तो हम पाते हैं की इन चित्रों में भी प्रकृति चित्रण प्रचुरता से किया गया है। जिस प्रकार जातक चित्रों के पार्श्व में प्रकृति का आच्छादन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ठीक उसी प्रकार मथुरा के धार्मिक चित्रों का अध्ययन करने पर हम पाते हैं की इन चित्रों में भी प्रकृति का चित्रण करते समय कलाकारो ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। मथुरा में पायी गयी जातक चित्रों पर आधारित कलाकृतियों मूल रूप से

जातक कथा के कथानकों पर आधारित थी। इस समय प्रचलित अन्य कलाओं में चित्रों के भीतर समृद्धता लाने के लिए नगरीय प्रतीकों का सहारा लिया गया। इनके चारों और तरह तरह के बार्डर बनाए गए परंतु मथुरा स्कूल के साथ ऐसा नहीं था, यहाँ पर बनी धार्मिक कलाकृतियां प्रकृति के करीब ही रही।

कई कलाविद मानते हैं की बाद में जब मथुरा के धार्मिक वृत्तों पर आधारित कलातियों का निर्माण हुआ तो मथुरा स्कूल की ये प्रकृति चित्रण की शैली बिना किसी बदलाव के लागू कर दी गयी। उदाहरण के तौर पर बृज के धार्मिक चित्रों को देखा जाये तो हम पाते हैं की इन चित्रों की रचना करते समय चित्रकारों ने श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े कथानकों को प्रचुरता से अपने भीतर समेटा है। ये ठीक उसी तरह है जैसे बौद्ध धर्म के लिए बनाए गए चित्रों में बौद्ध धर्म से जुड़े कथानकों को शामिल किया गया था।

बृज प्रांत में हुये धर्म के सरलीकरण के प्रतीक बृज के धार्मिक चित्र :

बृज क्षेत्र में धर्म का सरलीकरण भक्तिधारा का विकास करके किया गया है। जिस प्रकार बौद्ध धर्म का संदेश जीवन यापन के तरीके में सरलता लाने से जुड़ा हुआ था ठीक उसी प्रकार बृज में भी भक्ति की धारा प्रवाहित करने के उद्देश्य से एक सरलीकरण को प्रतिपादित किया गया। यहाँ पर धार्मिक चित्रों के विषयवस्तु में परिलक्षित एक और संदेश को देखना आवश्यक है। बृज प्रदेश में भक्ति के जो संदेश प्रवाहित किए गए हैं उनमें स्थानीय संस्कृति को प्रमुख रूप से शामिल किया गया है। यदि मथुरा के पर्यटन विभाग द्वारा बृज चौरासी कोस की परिक्रमा का मार्ग देखा जाये तो हम पाते हैं की यहाँ पर हिन्दू धर्म के सारे बड़े तीर्थ स्थानों को उचित स्थान दिया गया है। चारों धामों के प्रतीक के रूप में मंदिर बनाए गए हैं, गंगा नदी का प्रतिनिधित्व करती हुयी मानसी गंगा भी गोवर्धन में स्थापित की गयी हैं। मंदिरों एवं प्रतीकों की स्थापना एक प्रकार के भौगोलिक सरलीकरण की और भी इंगित करती है। अर्थात प्राचीन समय में हिन्दू धर्म के जितने प्रतिनिधि धार्मिक स्थान निर्धारित किए गए थे वे सभी प्रतीक रूप में मथुरा, वृन्दावन और बृज मण्डल में स्थापित किए गए हैं।

इन स्थानों के आसपास विकसित किए गए भित्ति चित्र भी हिन्दू संस्कृति एवं धर्म को बृज मण्डल के नियमों के अंतर्गत अपने भीतर अंतर्निहित किए हुये हैं। इन चित्रों को बनाते समय जो शैली अपनाई गयी है उसमें मथुरा के कला स्कूल की छाप स्पष्ट नजर आती है। इतिहासकारों एवं कला मर्मज्ञों ने इस प्रकार हुये सरलीकरण पर आधारित चित्रों को हिन्दू कला स्कूल के चित्रों का भी नाम दिया है। मथुरा के हिन्दू कला स्कूल के अंतर्गत वह चित्र भी शामिल किए गए हैं जो हिन्दू धर्म की प्राचीन संस्कृति पर आधारित हैं। श्रीकृष्ण की लीला स्थली होने की वजह से मथुरा हर युग में उनकी लीलाओ से जुड़ी कथाओं को लेकर समृद्ध रहा है। ये भी माना जाता है की इंडो–ग्रीक संस्कृति से जुड़े चित्रों एवं कलाकृतियों का निर्माण मूल रूप से बृज प्रदेश एवं आसपास के इलाकों में हुआ तो कई ऐसे चित्र एवं कलाकृतियां भी प्रकाश में आए जिन पर मूल रूप से ग्रीक प्रभाव थे । इनमें से कई चित्र एवं कलाकृतियां मथुरा के हिन्दू कला स्कूल के अंतर्गत बने चित्रों का अभिन्न हिस्सा है। ग्रीक चित्रकारों द्वारा स्थापित किए गए शारीरिक विन्यास एवं चेहरे मोहरे के विन्यास इन चित्रो में सपष्ट नजर आते हैं साथ ही साथ नयी पीढ़ी के कलाकारों को प्रेरित भी करते हैं।

हिन्दूकला और सांस्कृतिक सरलीकरण समाजशास्त्र एवं एंथ्रोपोलोजी के दृष्टिकोण से कई इतिहासकार, समाजशास्त्री और एंथ्रोपोलोजी के विशेषज्ञ चित्रों को इतिहास एवं संस्कृति का सजीव संवाहक भी मानते हैं। उनके अनुसार चित्र के साथ देश, काल और वातावरण से जुड़ी जानकारिया एक प्रभावी रूप में अगली पीढ़ी तक पहुँच जाती है। किसी चित्र के अंदर एक प्रभावी संवाहक बनने की योग्यता तब आती है जब वह चित्र समग्र ज्ञान की परिभाषाओ से ऊपर उठकर एक प्रकार की सार्वभौमिकता प्राप्त कर लेता है। इस सार्वभौमिकता की आभिलक्षणिक अभिव्यक्ति चित्र के सर्वव्यापी अनुवाद में निहित होती है। चित्रों को इस प्रकार के समालोचनात्मक समीकरण में रख कर उनमें निहित संस्कृति की तुलना विश्व की अन्य संस्कृ तियों से भी की जा सकती है ।

बृज के भित्ति चित्र अपने आप में भारतीय जीवन का ऐसा दर्शन समेटे हुये हैं जो परोक्ष रूप से द्वापर युगीन भारतीय संस्कृति का दर्पण बन कर भक्ति के प्रकाश में हमारे आज के जीवन का मार्ग निर्धारित करता है। ये चित्र एक कालजयी माध्यम के रूप में उभरते हैं जिन में द्वापर युगीन जीवन दर्शन निहित है। जिस प्रकार आज दिल्ली भारत की सत्ता का केंद्र है तथा सारी गतिविधियां दिल्ली को केंद्र मानकर संचालित होती है। ठीक उसी प्रकार द्वापर युग में मथुरा भी भारत की सत्ता का केंद्र था एवं इसका प्रभाव भारत की सांस्कृतिक एवं राजनैतिक गतिविधियों पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर था।

सांस्कृतिक इतिहास में मथुरा की पहचान कृष्ण अवतार और इससे जुड़ी कहानी की वजह से है। ये भी कहा जा सकता है की आधुनिक भारत में मथुरा की संस्कृति ने मूलरूप से पश्चिमी

उत्तर प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, दिल्ली और मध्य प्रदेश के बड़े हिस्से की संस्कृति को प्रभावित किया है। इस वजह से बृज पर्यटन परिपथ में स्थित वृन्दावन और गोवर्धन आसपास के राज्यो में रहने वाले लोगो के लिए नियमित धार्मिक श्रद्धा का स्थान बन गए हैं। इस को स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम गोवर्धन में लगाई जाने वाली सप्तकोसी परिक्रमा का उदाहरण ले सकते हैं। ये परिक्रमा पूर्णमासी के दिनो में एक मासिक त्योहार के रूप में लगाई जाती है तथा हर साल लाखो भक्तों को आकर्षित करती है। इस आवागमन से एक नयी मिश्रित संस्कृति का निर्माण हो रहा है। मथुरा और वृन्दावन की मूल संस्कृति धर्म को वाहन बना कर आस पास के राज्यो में अपनी जगह बना रही है।

यमुना नदी के किनारे बसे विश्राम घाट, एवं अस्कुण्डा घाट मथुरा में प्रचलित ब्राह्मणवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं। खास तौर से विश्राम घाट पर आज भी तीर्थ पुरोहित देखे जा सकते हैं जिनके पास यजमानों की कई पीढ़ियो का लेखा जोखा दर्ज होता है। धार्मिक रूप से विभिन्नता होने के बाद भी यहाँ पाये जाने वाले चित्रों में काफी हद तक समानता है। चार दशक पहले जब विश्राम घाट का रंगरोगन एवं पुनरुद्धार करवाया गया तब यहाँ पर कई ऐसे चित्र बनवाए गए जिन पर बृज संस्कृति की छाप थी ।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में ऐसे कई त्योहार मनाए जाते हैं जिनमें मथुरा की संस्कृति शामिल है। जब इन चित्रो में प्रकृति के चित्रण की व्याख्या की जाती है तो फिर मथुरा में मनाए जाने वाले विस्तृत सावन के महीने का उल्लेख भी आवश्यक हो जाता है। मथुरा और वृन्दावन में सावन के महीने को धर्म और श्रृंगार से जोड़ा गया है। एक तरफ यहाँ लौंद के महीने में परिक्रमा लगाकर श्रद्धालू पूरे वर्ष भर में कमाए गए पुण्य के बराबर का पुण्य कमाते हैं तो दूसरी ओर यहाँ कदंब और नीम के वृक्षों पर झूले डाल कर लोकगीत भी गुनगुनाए जाते हैं।

वर्तमान में बृज में पाये गए चित्रों में ये बातें स्पष्ट रूप से नजर आती हैं। आज मथुरा और वृन्दावन के मंदिरों में जो चित्र बनाए जा रहे हैं उनके पार्श्व ॅ में हम बौद्ध धर्म द्वारा प्रचलित किए गए प्रकृति चित्रण की झलक देख सकते हैं। इसके अलावा इन चित्रो में नायक एवं नायिका के चित्रण में इंडो–ग्रीक चित्रकला संस्कृति की झलक नजर आ जाती है। प्रकृति एवं संस्कृति के धर्म के साथ समन्वयन का ये एक अनूठा उदाहरण है जो चित्रों के रूप में प्राचीन और मध्ययुगीन भारत की अप्रतिम छवि दुनिया के सामने प्रस्तुत करता है। ये चित्र दर्शक की कल्पनाशीलता को अगले स्तर पर ले जाते हैं जहां पर हर चित्र के पार्श्व ॅ में छिपी गतिमान कहानी दर्शक को मंत्रमुग्ध कर देती है।

सबसे आवश्यक बात ये है की यही चित्र यहाँ पर आने वाले कलाकारो एवं पर्यटकों को आकर्षित करके उन्हे प्रेरित करते हैं। इसी प्रेरणा के वशीभूत होकर बने हुये चित्र आज डिजिटल माध्यम पर और अन्य कला वीथिकाओं में व्यावसायिक रूप से

बेचे जा रहे हैं। कहने को ये एक व्यावसायिक गतिविधि है मगर इस गतिविधि की वजह से बृज में प्रतिपादित सरलीकृत हिन्दू धर्म के विचार विश्व पटल में लोगो के घरों और साज सज्जा के लिए नियत आलों में भी स्थान पा रहे हैं।

संस्कृति के सरलीकरण और उस पर आधारित कला के अलंकरण की ये गाथा स्वामी विवेकानंद का उल्लेख किए बिना अपूर्ण है। बृज के सांस्कृतिक सरलीकरण का सबसे बड़ा उदाहरण उन्होने शिकागो में प्रस्तुत किया था। आज भारत की सांस्कृतिक–धार्मिक परंपरा से ओतप्रोत संदेश विश्वपटल में अपना स्थान बना रहे हैं और वैश्विक गाँव की परिकल्पना का आधार बन रहे हैं। इस समय में मथुरा की गलियों से उपजी ये संस्कृति प्रमुखता से भारत का प्रतिनिधित्व कर रही है। चित्रों और काव्य के माध्यम से उभरी ये छाप कितनी गहरी और पुरानी है इसका अंदाजा स्वामी विवेकानंद के शिकागो उद्बोधन से लगाया जा सकता है। पिछली सदी में स्वामी जी शिकागो में शून्य जैसे गूढ एवं गणितीय विषय को प्रस्तुत करने के लिए अमेरिका गए थे जहां पर उनसे भारतीय दर्शन जैसे गंभीर विषयों पर भाषण देने के लिए कहा गया। यहाँ पर स्वामी जी ने पाया की वहाँ उपस्थित श्रोता उस गूढ एवं वैज्ञानिक दर्शन शास्त्र की जगह श्री कृष्ण और गोपीयों के बीच हुई रासलीला एवं श्री कृष्ण की बांसुरी से उपजे संगीत के प्रभाव के बारे में जानने के लिए ज्यादा लालायित थे। स्वामी विवेकानन्द के इस अमर भाषण की सफलता के पीछे बृज की वह सरलता ही थी जिसके अंतर्गत आस्था को सरल भक्ति से जोड़ दिया गया था। कुछ ऐसा ही प्रभाव हम बृज के उन भित्ति चित्रों में भी देख सकते हैं जो भक्ति रस की धारा को नयी पीढ़ी के लिए एक आनंददायक रूप में प्रस्तुत करके धर्म के प्रसार का कार्य कर रहे हैं।

भित्ति चित्रों की विशिष्ट विशेषताएँ :

1. विषय–वस्तु

ब्रज के भित्ति चित्रों में प्रमुख रूप से कृष्ण लीलाओं का चित्रण किया गया है :

– **रासलीला :** गोपियों और कृष्ण के नृत्य का दृश्य।

– **गोवर्धन लीला :** भगवान कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की कथा।

– **यमुना पूजन :** यमुना नदी के प्रति श्रद्धा का चित्रण।

2. तकनीक और शैली

– प्राकृतिक रंगों का उपयोग, जैसे हरा, लाल, और नीला।

– भित्ति चित्रों में गहराई और सामंजस्यपूर्ण रेखांकन।

– धार्मिक प्रतीकों और गहन विवरणों का समावेश।

3. धार्मिक प्रतीकवाद

चित्रों में वृंदावन के वनों, यमुना नदी, और गोपियों की पंक्तियों के माध्यम से आध्यात्मिकता और सौंदर्य को दर्शाया गया है।

ब्रज के प्रमुख स्थल और उनके भित्ति चित्र :

1. वृंदावन

वृंदावन के मंदिरों की दीवारों पर भगवान कृष्ण और राधा की रासलीलाओं के अद्भुत चित्र मिलते हैं।

2. बरसाना

यह राधारानी का जन्मस्थान है, जहाँ की भित्ति चित्रकला में राधा–कृष्ण की प्रेम कथाएँ दर्शाई गई हैं।

3. गोकुल और नंदगांव

गोकुल और नंदगांव के मंदिरों में कृष्ण के बाल रूप और उनकी लीलाओं को चित्रित किया गया है।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव :

ब्रज के भित्ति चित्र न केवल पौराणिक संस्कृति को दर्शाते हैं, बल्कि समाज के धार्मिक अनुष्ठानों और त्योहारों को भी प्रतिबिंबित करते हैं। इन चित्रों में ग्रामीण जीवन, कृषि, और प्रकृति की सुंदरता का चित्रण देखने को मिलता है।

भित्ति चित्रों की वर्तमान स्थिति और संरक्षण :

वर्तमान में ब्रज के भित्ति चित्र उपेक्षा और समय के प्रभाव से क्षतिग्रस्त हो रहे हैं।

संरक्षण की आवश्यकता :

1. सरकारी प्रयास : भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (**ASI**) द्वारा संरक्षण।

2. स्थानीय भागीदारी : क्षेत्रीय संगठनों और कलाकारों की भागीदारी।

3. तकनीकी उपाय : भित्ति चित्रों की मरम्मत और डिजिटलीकरण।

निष्कर्ष :

ब्रज के भित्ति चित्र न केवल कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, बल्कि ये पौराणिक संस्कृति, भक्ति आंदोलन, और सामाजिक चेतना के संवाहक भी हैं। इनका संरक्षण सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन चित्रों का गहन अध्ययन न केवल भारतीय कला की समृद्ध परंपरा को उजागर करता है, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर भी पहचान दिलाने में सहायक हो सकता है।

संदर्भ सूची :

- आनंद डी– कृष्ण– (1992) द लिविँॉड ऑफ ब्रिज अभिनव पब्लिकेशन।
- भार्गव सरोज (1999) सौंदर्य बोध व ललित कला, कला पब्लिकेशन।
- गरोला व (1994) भारतीय चित्रकला इलाहाबाद मित्र प्रकाशन।
- शर्मा द. क. (2017). मेवाड़ शैली में वल्लभसंप्रदाय का चित्रण मथुरा : **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**
- मुदगल, ग. (1998) बृज शोध सागर मिशिगन विश्वविद्यालय ।
- भारतीय कला और शिल्प परंपरा, लेखकरू रामकृष्ण त्रिपाठी।
- ब्रज : संस्कृति और कला, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण।
- भागवत पुराण, विष्णु पुराण।
- ब्रज क्षेत्र के मंदिरों का फील्ड अध्ययन।